भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन

विभिन्न संकलपनाएं

सम्पादक : डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन

विभिन्न संकल्पनाएँ

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001

प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
Books n Books
51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001
ई-मेल : bnbajmer@gmail.com

संस्करण
प्रथम 2025

ISBN : 978 - 81 - 993854 - 7 - 4

मूल्य - 300/-

रचना -
भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन विभिन्न संकल्पनाएँ

सम्पादक -
डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा

आवरण -
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

मुद्रक -
श्री श्याम ऑफसेट, किशनगढ़

भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रमुख स्रोत : वेद और उपनिषद

कमलेश कुमार अटल
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। इसकी आधारशिला ज्ञान परम्परा पर टिकी हुई है, जिसने जीवन के सभी आयामों - धर्म, दर्शन, समाज, राजनीति, साहित्य, विज्ञान और कला को दिशा दी। इस परम्परा का विशेष गुण यह है कि यह केवल सैद्धान्तिक नहीं रही, बल्कि व्यवहारिक जीवन से गहराई से जुड़ी रही। भारतीय ज्ञान-परम्परा के स्रोत विविध और व्यापक हैं- वेद, उपनिषद, महाकाव्य, स्मृतियाँ, पुराण, दर्शन, आगम-त्रिपिटक और वैज्ञानिक शास्त्र। इन सभी ने मिलकर एक समन्वित विश्व-दृष्टि का निर्माण किया।

वेद

'वेद' शब्द संस्कृत की धातु 'विद्' से बना है, जिसका अर्थ है- 'जानना, ज्ञान प्राप्त करना'। इस प्रकार वेद का तात्पर्य है- ज्ञान का भण्डार। भारतीय परम्परा में वेदों को अपौरुषेय (अमानुषीय) और अनादि माना गया है, अर्थात् ये किसी मनुष्य की रचना नहीं, बल्कि ईश्वर-प्रदत्त ज्ञान का स्वरूप हैं, जिन्हें ऋषियों ने अपनी तपस्या और समाधि में श्रुति के रूप में सुना।

भारतीय ज्ञान-परम्परा का सर्वप्रथम और प्रमुख स्रोत वेद हैं। चार वेद-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद अपौरुषेय माने गये हैं। ऋग्वेद में देवताओं की स्तुतियाँ, सामवेद में संगीत-प्रधान स्तोत्र, यजुर्वेद में यज्ञ-विधान और अथर्ववेद में चिकित्सा एवं लोकजीवन से सम्बन्धित मन्त्र मिलते हैं।

वेद केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं, बल्कि इनमें खगोल, गणित, चिकित्सा और समाजशास्त्र की झलक भी है। वेदों के चार अंग- संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद- क्रमश: कर्मकाण्ड से लेकर अध्यात्म तक के मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस प्रकार वेद भारतीय ज्ञान का प्रथम भण्डार हैं।

भारतीय परम्परा में चार वेद माने जाते हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

प्रत्येक वेद का चार भागों में विभाजन है-

संहिता - मन्त्र-संग्रह

ब्राह्मण - यज्ञ-विधि और कमज्काण्ड

आरण्यक - ध्यान और उपासना सम्बन्धी चर्चा

उपनिषद - दार्शनिक विवेचन और आत्मज्ञान

1. ऋग्वेद

यह सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण वेद है। इसमें लगभग 10 मंडल, 1028 सूक्त और 10,589 मन्त्र हैं। इसमें अग्नि, इन्द्र, वरुण, मित्र, उषा, सरस्वती आदि देवताओं की स्तुतियाँ हैं। ऋग्वेद में प्राकृतिक शक्तियों को देवता मानकर उनका पूजन और स्तवन किया गया है। यह वेद भारतीय धर्म, दर्शन और समाज का आद्य दस्तावेज है।

ऋग्वेद के 10 मण्डन निम्नलिखित है-

(1) प्रथम मंडल - अग्नि, इन्द्र, वरुण, मित्र आदि देवताओं की स्तुति। प्रारम्भिक यज्ञ-मन्त्र।

(2) द्वितीय मंडल - गृत्समद ऋषि के सूक्त। मुख्यत: इन्द्र और अग्नि की स्तुति।

(3) तृतीय मंडल - विश्वामित्र ऋषि के सूक्त। इसमें 'गायत्री मन्त्र' (3.62.10) आता है।

(4) चतुर्थ मंडल - वामदेव ऋषि के सूक्त। इसमें सोम-यज्ञ और इन्द्र की महिमा वर्णित है।

(5) पंचम मंडल - अत्रि ऋषि के सूक्त। इसमें उषा, अश्विनीकुमार और सूर्य की उपासना है।

(6) षष्ठ मंडल - भारद्वाज ऋषि के सूक्त। इसमें अग्नि, इन्द्र और मरुतों की स्तुतियाँ।

(7) सप्तम मंडल - वशिष्ठ ऋषि के सूक्त। **'दसराज्ञ युद्ध'** (भरत वंश बनाम अन्य जनजातियाँ) का उल्लेख।

(8) अष्टम मंडल - कण्व ऋषि के सूक्त। इसमें सोमरस और इन्द्र की महिमा।

(9) नवम मंडल - संपूर्ण सोम-मंडल। सोमरस की उत्पत्ति, शुद्धि और स्तुति।

(10) दशम मंडल - दार्शनिक और सामाजिक सूक्त।

सूक्त :- नासदीय सूक्त (10.129) - सृष्टि का रहस्य। पुरुष सूक्त (10.90) - वर्ण व्यवस्था का आधार। हिरण्यगर्भ सूक्त - ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति। देवी सूक्त - (10.125) - शक्ति की उपासना।

2 यजुर्वेद

इसमें यज्ञ-विधि और अनुष्ठानों का विस्तार है। इसके दो प्रकार माने गये-

(1) शुक्ल यजुर्वेद (माध्यन्दिन और कान्व शाखा) - 40 अध्याय (अध्याय 40 में 'ईशोपनिषद')।

(2) कृष्ण यजुर्वेद (तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल) - मन्त्र और ब्राह्मण गद्य मिश्रित।

इसमें मन्त्र और गद्यरूप आहुति-विधानों का वर्णन है। यह वेद पुरोहित और यजमान को यज्ञ के समय मार्गदर्शन करता है।

* यज्ञों की विस्तृत विधि: अग्निहोत्र, दार्शपूर्णमास, वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध आदि।
* आहुति के मन्त्र और यजमान-पुरोहित के संवाद।
* दार्शनिक सूक्त - ईशावास्य उपनिषद (शुक्ल यजुर्वेद 40वाँ अध्याय) - अद्वैत और आत्मज्ञान का उपदेश। कर्म और त्याग का समन्वय।
* राजनीतिक विचार - राजा के कर्तव्य, प्रजा का संरक्षण और न्याय।

3. सामवेद

इसे 'गानवेद' भी कहा जाता है। इसमें लगभग 1875 मन्त्र हैं, जिनमें से अधिकांश ऋग्वेद से लिये गये हैं। इसका उपयोग मुख्यत: सामगान (संगीत) में होता था। भारतीय शास्त्रीय संगीत की जड़ें सामवेद में पाई जाती हैं। सामवेद ने संगीत, भक्ति और उपासना परम्परा को स्वर दिया।

इसके प्रमुख दो मुख्य भाग है- (1) आर्चिक संहिता - मन्त्र-संग्रह। (2) गान संहिता- इन मन्त्रों का गायन रूप।

इसके अन्तर्गत मुख्य देवता - इन्द्र और सोम है, गान परक मन्त्र - जिन्हें 'उद्गाता' पुरोहित द्वारा सामगान के रूप में गाया जाता था। भारतीय संगीत की जड़ें - स्वर, सरगम और रागों का मूल विकास। ध्यान, उपासना और भक्ति परक भाव।

4. अथर्ववेद

इसे 'अथर्वण वेद' या 'भैषज्य वेद' भी कहा जाता है। इसमें लगभग 20 काण्ड और 730 सूक्त हैं। इसमें चिकित्सा, औषधियाँ, रोग-निवारण मन्त्र, लोकजीवन, गृहस्थ-धमज़ और तंत्र-मन्त्र का ज्ञान है। यह वेद सामान्य जन के जीवन से निकटता रखता है, क्योंकि इसमें रोग-निवारण, शान्ति और समृद्धि की कामना हेतु मन्त्र हैं। इसमें प्रमुख शाखाएँ - शौनक और पैप्पलाद है।

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित विषय-वस्तु है-

* **भैषज्य मन्त्र** - रोग निवारण, औषधि-गुण और चिकित्सा।
* **शान्ति मन्त्र** - दु:स्वप्न, ग्रह-शान्ति और अशुभ से रक्षा।
* **समृद्धि मन्त्र** - धन, संतान और आयु वृद्धि की कामना।
* **सामाजिक जीवन** - विवाह, गृहस्थ जीवन, कृषि और पशुपालन।

* **दार्शनिक सूक्त** – 'प्राण सूक्त' – प्राण को सर्वोच्च शक्ति माना। पृथ्वी सूक्त – पृथ्वी को माता स्वरूप मानकर स्तुति।

वेदों की विशेषताएँ

* **अनादि और अपौरुषेय** – मानव-रचित नहीं, ईश्वर-प्रकट।
* **श्रुति स्वरूप** – गुरु-शिष्य परम्परा से मौखिक रूप से प्राप्त।
* समग्रता – धर्म, दर्शन, समाज, राजनीति, चिकित्सा, विज्ञान आदि सभी का ज्ञान।
* **सार्वभौमिकता** – वेद किसी जाति, वर्ग या देश विशेष के लिए नहीं, सम्पूर्ण मानवता के लिए।
* पुरुषार्थ मार्गदर्शन – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी का विवेचन।

वेदों का महत्त्व

1. **धार्मिक महत्व** :- देवताओं की स्तुति और यज्ञ-विधान से आस्था का आधार।
2. **दार्शनिक महत्त्व** :- उपनिषदों के माध्यम से आत्मा, ब्रह्म और मोक्ष की व्याख्या।
3. **सामाजिक महत्त्व** :- परिवार, विवाह, शिक्षा और जीवन-मूल्यों की नींव।
4. **वैज्ञानिक महत्त्व** :- गणित, खगोल, चिकित्सा और धातुकर्म के बीज।
5. **सांस्कृतिक महत्त्व** :- साहित्य, कला, संगीत और काव्य का उद्गम।

उपनिषद

भारतीय ज्ञान परम्परा में उपनिषदों का स्थान अत्यन्त उच्च और विशिष्ट है। इन्हें वेद का अन्तिम भाग कहा जाता है और इसलिए इनका नाम 'वेदान्त' भी पड़ा। 'उपनिषद्' शब्द का शाब्दिक अर्थ है — 'उप' अर्थात् समीप, 'नि' अर्थात् निष्ठापूर्वक तथा 'सद्' अर्थात् बैठना। अर्थात्, गुरु के समीप श्रद्धा, विनय और निष्ठा के साथ बैठकर परमज्ञान की प्राप्ति करना। इस प्रकार उपनिषद् केवल ग्रन्थ ही नहीं बल्कि एक जीवित परम्परा का नाम है जिसमें ज्ञान की साधना, जीवन के गूढ़तम रहस्यों की खोज और आत्मा की मुक्ति का मार्ग प्रतिपादित है।

उपनिषदों में दार्शनिक चिन्तन की गहराई और आध्यात्मिक अनुभव की गम्भीरता दोनों ही विद्यमान हैं। यदि वेदों के संहितापरक भागों में यज्ञ, अनुष्ठान और देवताओं की स्तुति का वर्णन मिलता है तो उपनिषदों में उनका आन्तरिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक रूप प्रकट होता है। यहाँ मनुष्य और ब्रह्माण्ड, आत्मा और परमात्मा, जीवन और मृत्यु, बन्धन और मोक्ष जैसे प्रश्नों पर चिन्तन किया गया है। यही कारण है कि इन्हें 'मोक्षशास्त्र' भी कहा जाता है।

भारतीय दार्शनिक परम्परा की लगभग सभी प्रमुख दर्शनों की मूल प्रेरणा उपनिषदों

से ही निकली है। अद्वैत वेदान्त, विशिष्टाद्वैत, द्वैत, सांख्य, योग—सभी ने किसी न किसी रूप में उपनिषदों के सिद्धान्तों का अवलम्बन किया है। गीता और ब्रह्मसूत्र जैसे ग्रन्थ भी वस्तुत: उपनिषदों के ही सार और व्याख्या हैं। यही कारण है कि उपनिषदों को 'श्रुति-प्रस्थान' कहा गया और बाद के सभी दार्शनिक ग्रन्थ 'स्मृति-प्रस्थान' या 'न्याय-प्रस्थान' की श्रेणी में रखे गये।

दार्शनिक दृष्टि से उपनिषदों का प्रमुख सिद्धान्त 'ब्रह्म और आत्मा की एकता' है। ब्रह्म को अनन्त, शाश्वत, सर्वव्यापी, चेतन और निर्गुण माना गया है। वही ब्रह्म प्रत्येक जीव में आत्मा के रूप में स्थित है। 'अहं ब्रह्मास्मि', 'तत्त्वमसि', 'अयमात्मा ब्रह्म', 'प्रज्ञानं ब्रह्म' जैसे महावाक्य इसी एकता को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार उपनिषदों का सन्देश है कि प्रत्येक मनुष्य मूलत: दिव्य है, उसमें परमसत्य का प्रतिबिम्ब विद्यमान है और आत्मसाक्षात्कार के द्वारा वह उस परमसत्य से एकाकार हो सकता है।

उपनिषदों में केवल दार्शनिक चर्चा ही नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन और आचार-नीति का भी समन्वय है। ये हमें बताते हैं कि बाह्य आडम्बरों, कर्मकाण्ड और यज्ञीय जटिलताओं से ऊपर उठकर मनुष्य को अन्तर्मुखी होना चाहिए। आत्मसंयम, तप, सदाचार और ब्रह्मविद्या के द्वारा ही वास्तविक शान्ति और मुक्ति प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार उपनिषद मानवता को एक गहन आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जो भौतिकता की सीमाओं को लाँघकर अमरत्व की ओर ले जाता है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी उपनिषदों का महत्व असाधारण है। शोपेनहावर जैसे पाश्चात्य दार्शनिकों ने इन्हें मानवता की सबसे महान उपलब्धियों में से एक माना। उनके अनुसार उपनिषदों का अध्ययन करने से जीवन के दु:खों से मुक्ति की अनुभूति होती है। यही कारण है कि आज भी उपनिषद केवल भारत ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व की आध्यात्मिक चेतना को प्रभावित कर रहे हैं।

अत: कहा जा सकता है कि उपनिषद भारतीय ज्ञान परम्परा का शिखर हैं। ये हमें आत्मा की गहराई, ब्रह्म की व्यापकता और जीवन के अंतिम लक्ष्य—मोक्ष—की ओर ले जाते हैं। उपनिषद केवल अतीत की स्मृति नहीं बल्कि आज भी जीवन की दिशा दिखाने वाला प्रकाशस्तम्भ हैं, जिनकी शिक्षा है—सत्य को जानो, आत्मा को पहचानो और उस अनन्त ब्रह्म से एकाकार होकर अमरत्व प्राप्त करो।

उपनिषदों ने मोक्ष को मानव जीवन का परम लक्ष्य बताया और आत्मज्ञान को सर्वोच्च विद्या माना। यही कारण है कि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और माध्वाचार्य जैसे आचार्यों ने अपने-अपने दर्शन की जड़ें इन्हीं उपनिषदों में खोजीं।

भारतीय ज्ञान परम्परा में उपनिषदों की संख्या तो सौ से भी अधिक मानी जाती है, किन्तु लगभग ग्यारह से बारह उपनिषद ऐसे हैं जिन्हें 'मुख्य उपनिषद' कहा गया है। ये उपनिषद केवल भारतीय दर्शंन ही नहीं बल्कि संपूर्णं विश्व की आध्यात्मिक चिन्तनधारा

को गहराई से प्रभावित करते रहे हैं। प्रत्येक उपनिषद का अपना विशिष्ट स्वरूप, सन्देश और दार्शनिक महत्व है। यहाँ इन प्रमुख उपनिषदों का निबंधात्मक और वणज़्नात्मक विवेचन प्रस्तुत है।

1. ईशोपनिषद

ईशोपनिषद् अत्यन्त संक्षिप्त (केवल 18 मंत्र) होते हुए भी अत्यधिक प्रभावशाली है। इसमें जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक पक्ष का अद्भुत सामंजस्य दिखाया गया है। इसका उद्घाटन मन्त्र है—'ईशावास्यमिदं सर्वं

यत्किञ्च जगत्यां जगत्। अर्थात् सम्पूर्ण जगत् में ईश्वर का ही वास है। इस उपनिषद का मूल सन्देश यह है कि मनुष्य संसार में रहते हुए भी वैराग्य की भावना से जीवन यापन करे। यह न तो जीवन से पलायन की शिक्षा देता है और न ही केवल भौतिक सुखों में डूबने की; बल्कि यह जीवन को ईश्वरार्पण कर संतुलित दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह करता है।

2. केनोपनिषद

'केनोपनिषद्' नाम ही संकेत करता है कि इसमें 'केन'—किसके द्वारा—प्रश्न उठाया गया है। इसमें ब्रह्म और इन्द्रियों के सम्बन्ध को समझाने का प्रयास है। यह उपनिषद् बताता है कि इन्द्रियाँ, प्राण, मन और वाणी किसी भी वस्तु का अनुभव तभी कर पाते हैं जब उनके पीछे ब्रह्म की शक्ति काम करती है। ब्रह्म स्वयं तो इन्द्रियातीत है, किन्तु उसी के कारण सब कुछ अनुभव योग्य है। इसका प्रमुख निष्कर्ष यह है कि आत्मा और ब्रह्म का ज्ञान इन्द्रिय और मन की सीमा से परे है, और वही सच्चा विद्या है।

3. कठोपनिषद

कठोपनिषद अत्यन्त लोकप्रिय है क्योंकि इसमें यमराज और नचिकेता का संवाद आता है। नचिकेता बालक होते हुए भी मृत्यु के देवता यम से आत्मा और अमरत्व के रहस्य पूछता है। यम उसे आत्मा के अविनाशी स्वरूप और ब्रह्मविद्या का उपदेश देते हैं। इस उपनिषद् का केंद्रीय विचार यह है कि आत्मा नित्य, अविनाशी और अजर-अमर है। मृत्यु केवल शरीर का अन्त है, आत्मा कभी नहीं मरती। कठोपनिषद् का यह सन्देश भारतीय दर्शन के साथ-साथ महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों को भी गहराई से प्रभावित करता रहा।

4. प्रश्नोपनिषद

इस उपनिषद् में छः ऋषियों द्वारा पूछे गये छः गहन प्रश्नों के उत्तर दिए गये हैं। इन प्रश्नों में प्राण की उत्पत्ति, प्राण की महिमा, ध्यान और ओंकार का रहस्य, मृत्यु के बाद की स्थिति तथा मोक्ष का स्वरूप जैसे विषयों पर चर्चा की गयी है। यह उपनिषद् मानो प्रश्नोत्तर के रूप में दार्शनिक शिक्षा का जीवंत उदाहरण है। विशेष रूप से इसमें प्राण को परमशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है और बताया गया है कि सम्पूर्ण

जगत् प्राण पर आधारित है।

5. मुण्डकोपनिषद

मुण्डकोपनिषद् में ज्ञान को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है—'परा विद्या' और 'अपरा विद्या'। अपरा विद्या वेदों और शास्त्रों का बाह्य ज्ञान है, जबकि परा विद्या आत्मा और ब्रह्म के साक्षात्कार की विद्या है। यह उपनिषद् कहता है कि केवल परा विद्या ही मोक्ष की ओर ले जाती है। इसमें परमात्मा को 'सत्य का सत्य' और 'प्रकाश का प्रकाश' कहा गया है। मुण्डकोपनिषद् का प्रसिद्ध मन्त्र है—'सत्यमेव जयते, नानृतम्।' यही मन्त्र आज भारत गणराज्य का राष्ट्रीय आदर्शवाक्य है।

6. माण्डूक्योपनिषद

माण्डूक्योपनिषद् अत्यन्त छोटा है (केवल 12 मन्त्र), परन्तु इसकी दार्शनिक गहराई अनुपम है। इसमें 'ओ३म्' (प्रणव) का विवेचन है और इसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रतीक माना गया है। इसमें चेतना की चार अवस्थाओं का वर्णन किया गया है—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। तुरीय अवस्था ही आत्मसाक्षात्कार और ब्रह्मानुभूति की पराकाष्ठा है। गौड़पादाचार्य और शंकराचार्य जैसे आचार्यों ने माण्डूक्योपनिषद को अद्वैत वेदान्त का मुख्य आधार माना।

7. तैत्तिरीयोपनिषद

इस उपनिषद् में मनुष्य के अस्तित्व को पाँच कोशों (आवरणों) के रूप में प्रस्तुत किया गया है—अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय। इससे स्पष्ट होता है कि मानव केवल शरीर नहीं है बल्कि उसकी गहराई में आनन्दमय आत्मा स्थित है। यह उपनिषद् ब्रह्मानन्द की अनुभूति को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। इसमें गुरु-शिष्य परम्परा और शिक्षा की महत्ता पर भी प्रकाश डाला गया है।

8. ऐतरेयोपनिषद

ऐतरेयोपनिषद् में सृष्टि के रहस्य पर गहन चिन्तन मिलता है। इसमें कहा गया है कि ब्रह्म ने ही सृष्टि की रचना की और आत्मा ही समस्त प्राणियों में व्याप्त है। इसका महावाक्य है—'प्रज्ञानं ब्रह्म' अर्थात् चेतना ही ब्रह्म है। यह उपनिषद् यह भी बताता है कि मनुष्य अपने ज्ञान और विवेक के कारण ही श्रेष्ठ है।

9. छान्दोग्योपनिषद

छान्दोग्योपनिषद् अत्यन्त विस्तृत है और इसमें अनेक दार्शनिक कथाएँ और संवाद हैं। इसका प्रमुख महावाक्य है—'तत्त्वमसि' (तू वही है)। इसका अर्थ है कि जीवात्मा और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है। इसमें 'सत्यकाम जाबाल' की कथा, 'श्वेतकेतु' का संवाद और 'उद्दालक आरुणि' के उपदेश जैसी प्रसिद्ध घटनाएँ मिलती हैं। यह

उपनिषद् भक्ति, उपासना और ध्यान की गहराई पर भी प्रकाश डालता है।

10. बृहदारण्यकोपनिषद

यह सबसे बड़ा उपनिषद् है और इसमें जीवन के लगभग सभी दार्शनिक प्रश्नों पर चर्चा मिलती है। इसका महावाक्य है—'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूँ)। इसमें याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी का संवाद विशेष प्रसिद्ध है, जिसमें याज्ञवल्क्य आत्मविद्या और ब्रह्मज्ञान की व्याख्या करते हैं। इसमें 'नेति-नेति' (यह नहीं, यह नहीं) का सिद्धान्त भी दिया गया है, जिसके अनुसार ब्रह्म का वर्णन किसी विशेष गुण से नहीं किया जा सकता।

11. श्वेताश्वतरोपनिषद

इस उपनिषद् में ईश्वर को सगुण रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें ईश्वर को 'महेश्वर', 'देवदेव', 'भूतपति' आदि नामों से पुकारा गया है। यह उपनिषद् ध्यानयोग और ईश्वर की भक्ति पर विशेष बल देता है। इसमें कर्म और ईश्वर की कृपा से मुक्ति का मार्ग बताया गया है। यही कारण है कि यह उपनिषद् भक्ति-दर्शन के उद्‌भव में महत्वपूर्ण माना जाता है।

इन उपनिषदों का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि भारतीय मनीषा ने बाह्य अनुष्ठानों और कर्मकाण्ड से ऊपर उठकर जीवन के मूल प्रश्नों—मैं कौन हूँ? जगत् क्या है? परम सत्य क्या है?, का समाधान खोजा। प्रत्येक उपनिषद् अपनी शैली और सन्दर्भ में विशिष्ट है, किन्तु इनका साझा सन्देश यही है कि आत्मा और ब्रह्म एक ही हैं, और आत्मज्ञान ही मोक्ष का मार्ग है। यही कारण है कि इन्हें 'वेदान्त' की संज्ञा दी गई और ये भारतीय अध्यात्म का शिखर माने गए।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि वेद और उपनिषद भारतीय ज्ञान परंपरा के दो ऐसे स्तम्भ हैं, जिनके बिना भारतीय दर्शन, संस्कृति और अध्यात्म की कल्पना अधूरी है। वेद हमें बाह्य जीवन के लिए धर्म, यज्ञ, कर्तव्य और समाज व्यवस्था की शिक्षा देते हैं, जबकि उपनिषद हमें आंतरिक जीवन का सत्य बताते हुए आत्मा और ब्रह्म की एकता का बोध कराते हैं।

वेद जहाँ 'श्रुति' का प्रारम्भ हैं, वहीं उपनिषद उसका चरम और निष्कर्ष हैं। वेद जीवन को नियम, व्यवस्था और समन्वय प्रदान करते हैं, तो उपनिषद उस जीवन को परम सत्य और मोक्ष की ओर अग्रसर करते हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो वेद कर्म का मार्ग दिखाते हैं और उपनिषद ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। दोनों मिलकर यह बताते हैं कि मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य केवल सांसारिक सुख नहीं बल्कि आत्मा की मुक्ति और परमात्मा से एकत्व की अनुभूति है।

❑❑❑